जिंदगी की यात्रा जारी है

राम की आँखें तब खुली जब सूरज की किरणें उसे उसके गहरी नींद से अलग करने की कोशिश में लगे पड़े थे। आँख खोलते ही उसने देखा कि रेलगाड़ी की खिड़कियों से दूर पहाड़ी की ओर सूरज ढलने को आया है। कुछ पल के लिए उसने सोचना-समझना बंद करके अपने जिंदगी की ~~पन्नों~~ पुराने पन्नों को एक बार फिर याद करने लगा। वह उन यादों से विदा लेकर वास्तविकता में लौट ही रहा था कि रेलगाड़ी ~~स्टेश~~ स्टेशन पे आकर रुकी। रेलगाड़ी के साथ ही उसकी यादों की सिलसिला भी टूट गया।

हर रोज की तरह, थका हुआ घर आता राम के इंतजार में उसके घर के एक लैंप जला पड़ा था। बात यह नहीं था कि कोई घर पर उसकी इंतजार में बैठा है, बात यह था कि राम चाहता नहीं था कि जब वह वापस घर लौटे तो उसका मुलाकात अँधेरे से हो। उसकी जिंदगी में अँधकार की कमी बिलकुल न था और इसलिए ~~[illegible]~~ वह खुद को एक झूठा दिलासा देने की कोशिश कर रहा था। दो साल पहले तक तो वाकई में कोई राम की जिंदगी में थी, जो देर रात तक उसकी इंतजार में उस लैंप को जलाए रखती थी, उसकी माँ।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

राम के लिए उसकी माँ ही सबकुछ था। राम जब चार साल का था तब उसके पापा का मृत्यु हुआ था, उसकी माँ ने ही उसे पाला। राम अपने माँ के बिना जीने के बारे में सोच भी नहीं पाता था और आज जिंदगी ने उसे एक ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा किया कि माँ की आँचल तक उसे नसीब नहीं।

घर की ताला खोलते समय राम के आँखों के सामने कुछ पुराने दृश्य ~~चलने~~ चले आए। राम और उसकी माँ एक शादी से लौट रहे थे और घर आकर ताला खोलने लगा तो चाबी नहीं मिल पा रहा था। माँ ने हँसकर राम से कहा, 'पता था मुझे तू फिर चाबी खो देगा। इसलिए दूसरा मैंने अपने ~~पास~~ साथ ही रखी है।' राम मुस्कुराते हुए खुद से कहा, 'ठीक कहती थी तू, माँ, क्या ही करूँगा मैं तेरे बिना।'

घर के अंदर आकर राम ने घर को समेटा, सफाई करा और फिर नहाने ~~के~~ के लिए चला गया। नहाकर आया राम खुद ही रसोईघर में गया और खाना भी बनाया। खाना थाली में परोसकर वह कुरसी पर बैठ तो गया मगर पता नहीं क्यों आज उसे अपनी माँ की ~~बातें~~ याद बेहद आ रहा था। वह भूखा था, खाना चाहता था, मगर खा नहीं पा रहा था। उसके दिल और दिमाग में बस उसकी माँ ही था।

राम ने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसे अपनी जिंदगी की यात्रा में अपनी माँ से विदा लेना पड़ेगा। माँ ने उसकी आखरी पलों में राम से वादा लिया था कि चाहे कुछ भी हो उसे जिंदगी के नाम की सफ़र को तय करना है, जारी रखना है, और जीतना है। उसके माँ ने कभी उसे हारना नहीं सिखाया मगर आज वह अपने जज्बातों के सामने कहीं न कहीं हार रहा था।

माँ को याद करते वक्त उसकी होंठों पर मुस्कान था मगर उसकी आँखों से बहती आँसू उस मुस्कान को छुपाने पर निश्चित था। पहले सब कुछ माँ करती थी, राम को उठाने से लेकर सुलाने तक। लेकिन अब माँ न रही, बस खालीपन और अँधकार ही था उसके जिंदगी में। जब भी राम हार मानने लगता है, उसकी माँ की यादें, बातें और उससे की गया वादा राम को आगे बढ़ने की क्षमता देता था। मरने के बाद भी माँ उसका ताकत थी। राम को नहीं पता था कि वह क्यों जिंदगी जिएँ मगर उसे जीना था, अपने माँ से किया वादा निभाने के लिए उसे जिंदगी की यात्रा में थमना न था, जारी रहना था। राम मन ही मन कहता है अपने बहते आँसुओं को पोंछते हुए - यादें भी अजीब है, बिलकुल एक किताब जैसा, एक पन्ना पढ़ोगे तो अगला भी पढ़ना पड़ता ही है।

अपनी माँ की यादों में खोया हुआ राम कब नींद की दुनिया में चला गया, उसे खुद पता नहीं लगा। सुबह चेहरे पर धूप पड़ते ही राम की नींद खुली। वह बिस्तर से उठकर तैयार होने में लग गया। वह हमेशा खुद को यह बताता रहता था कि अब तुम्हें ही सब कुछ करना है। घर की काम सब निपटाकर रोज की तरह राम दफ्तर के लिए निकल गया। रास्ते में वह चल तो रहा था मगर हर कदम के साथ खुदको यह याद दिला रहा था कि उसे जिंदगी की यात्रा को जारी रखना है, जीतना है। राम सिर्फ चौबीस साल का ही था और उसकी पूरी जिंदगी उसके सामने पड़ा था मगर राम की जिंदगी उसकी माँ थी। माँ की साँसों की डोर जब टूटा तब उसके जीने की चाहत भी खत्म हुआ लेकिन जिंदगी की रूप की यात्रा वह हर हाल में तय करना चाहता था और यह करने से उसे रोकनेवाला अब कोई न था। वह जानता था कि अकेले इस सफ़र को पार करना आसान नहीं होगा मगर उसके ताकत बनकर उसकी माँ के दुआएँ हमेशा उसके पास ही था और माँ की आशीर्वाद यादें उसे हौसला देने से कभी सदा ही देता था। राम चलते चलते सामने की ओर देखता है, जिसमें वह अपनी मंजिल देखता है और वहाँ तक पहुँचने के लिए ही अब उसे जीना है, यात्रा को जारी रखना है।